



“ (ਹੁ) ”

“ ਆਦਿ ਗੁਰੂ ਨਮੋ । ਜੁਗਾਦਿ ਗੁਰੂ ਨਮੋ । ਸਤਿਗੁਰੂ ਨਮੋ ।
ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰਦੇਵ ਨਮੋ । ”

ਦਾਸ ਦੋਨੋਂ ਹਥ ਜੋੜ ਕੇ ਸੰਗਤ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਵਿਚ ਮੱਥਾ
ਟੇਕਦੇ ਹੋਏ, ਆਪਣੇ ਗੁਨਾਹਾਂ ਦੀ ਮਾਫੀ ਲੈਂਦੇ ਅਰਦਾਸ ਬੇਨਤੀ ਕਰਦਾ
ਹੈ ਸੰਗਤ ਦੀ ਸਮਰਥਾ ਹੈ ਬਖਸ਼ਾਣ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾਲਤਾ ਕਰੇ ਸੰਗਤ ਦੇ ਬਖਸ਼ੇ
ਹੋਏ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਵੀ ਬਖਸ਼ਾ ਦੇਂਦੇ ਹਨ ।

४४
 ० हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ । हउ विचि जमिआ हउ
 विचि मुआ । हउ विचि दिता हउ विचि लइआ । हउ विचि
 खटिआ हउ विचि गइआ । हउ विचि सचिआरु कूडिआरु ।
 हउ विचि पाप पुन वीचारु । हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु
 । हउ विचि हसै हउ विचि रोवै । हउ विचि भरीऐ हउ विचि
 धोवै । हउ विचि जाती जिनसी खोवै । हउ विचि मूरखु हउ
 विचि सिआणा । मोख मुकति की सार न जाणा । हउ विचि
 माइआ हउ विचि छाइआ । हउमै करि करि जंत उपाइआ ।
 हउमै बूझै ता दरु सूझै । गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ।
 नानक हुकमी लिखीऐ लेखु । जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥
 मठ-2 । कागा चूडि न पिंजरा बसै त अउरि जाहि । जित
 पिंजरे मेरा सहु बसै मांस न तिदू खाहि । फरीदा तन सुका
 पिंजर थीआ तलीआं खूंडहि काग । अजै सुख न बाहुडिओ
 देख बदे के भाग । कागा करंग ढंढोलिआ सगला मांस । ऐ
 दुई नैना मत छुहओ पिर देखन की आस । हउमै एहा जाति
 है हउमै करम कमाहि । हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी
 पाहि । हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाई । हउमै
 एहो हुकम है पइऐ किरति फिराहि । हउमै दीरघु रोगु है दारु
 भी इसु माहि । किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु
 कमाहि । नानक कहै सुणह जनहु इतु संजमि दुख जाहि
 ॥2॥ पउड़ी । सेव कीती संतोखीई जिन्ही सचो सचु

(1-466)

(1-671-510)

RECORDING NOT AVAILABLE